International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 2; April to Jun 2025; Page No. 1-4
Peer Review, Indexed and Refereed Journal

गांधीवादी दर्शन और समकालीन वैश्वीकरणः एक वैकल्पिक विकास मॉडल की खोज

डा. सुनीता बघेले
सहायक प्राध्यापक
राजनीति शास्त्र
भगवान विरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय
दिव्यगवा, रीवा मध्य प्रदेश

सारांश

पूंजी, तकनीक, विचार और संस्कृति अब राष्ट्रीय सीमाओं से बंधे नहीं रह गए हैं। विश्व एक 'वैश्विक ग्राम' में बदल रहा है, जहाँ आर्थिक विकास के अवसर तो बढ़े हैं, लेकिन साथ ही सामाजिक विषमता, सांस्कृतिक एकरूपता और पर्यावरणीय संकट भी गहराए हैं ऐसे समय में गांधीवादी दर्शन एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत करता है जो समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ विकास की राह सुझाता है। वैश्वीकरण के इस जटिल और बहुआयामी युग में गांधीवादी दर्शन एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। उनका मॉडल हमें एक ऐसा विकास दृ ष्टिकोण प्रदान करता है जो न्याय, समानता, पारिस्थितिक संतुलन और नैतिक मूल्यों पर आधारित है। यदि हम गांधी के ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, सादगी और सत्य के विचारों को आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित कर सकें, तो हम एक ऐसे वैश्विक समाज की ओर बढ़ सकते हैं जो न केवल समृद्ध हो, बल्कि न्यायपूर्ण और संतुलित भी हो।

मुख्य शब्दः गांधीवादी दर्शन, समकालीन वैश्वीकरण, वैकल्पिक मॉडल

आज का युग वैश्वीकरण का युग है। पूंजी, तकनीक, विचार और संस्कृति अब राष्ट्रीय सीमाओं से बंधे नहीं रह गए हैं। विश्व एक 'वैश्विक ग्राम' में बदल रहा

है, जहाँ आर्थिक विकास के अवसर तो बढ़े हैं, लेकिन साथ ही सामाजिक विषमता, सांस्कृतिक एकरूपता और पर्यावरणीय संकट भी गहराए हैं (Stiglitz, 2002, p. 28)। ऐसे समय में गांधीवादी दर्शन एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत करता है जो समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ विकास की राह सुझाता है।

महात्मा गांधी के विचारों की जड़ें भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में थीं, पर उनका दृष्टिकोण सार्वभौमिक था। वे मानते थे कि सच्चा विकास वही है जो व्यक्ति को स्वावलंबी बनाए, समुदाय को सशक्त करे और प्रकृति के साथ सामंजस्य रखे (Gandhi, 1946, p.72)। उन्होंने आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की आलोचना करते हुए कहा था कि यह मनुष्य की आत्मा को विकृत करती है और प्रकृति का दोहन करती है (Gandhi, 1909, p. 35)। उनका विश्वास था कि जब तक हम स्थानीय आवश्यकताओं, संसाधनों और नैतिक मूल्यों के आधार पर विकास की रूपरेखा नहीं बनाते, तब तक समतामूलक समाज की कल्पना अधूरी रहेगी।

गांधी ने 'ग्राम स्वराज' का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह केवल ग्रामीण भारत की चिंता नहीं थी, बल्कि एक ऐसा सामाजिक–आर्थिक ढांचा था जो विकेन्द्रीकरण, आत्मनिर्भरता, स्वदेशी और सामूहिक सहभागिता पर आधारित था। उनका विचार था कि प्रत्येक गांव एक स्वतंत्र इकाई हो, जो अपने संसाधनों के बल पर अपना विकास करे और बाहरी निर्भरता न्यूनतम हो (Gandhi, 1937, p. 44)। इस विचार में ही वे संभावनाएँ छिपी हैं जो आज के केंद्रीकृत, कॉर्पोरेट–आधारित वैश्वीकरण के विकल्प के रूप में देखी जा सकती हैं।

गांधी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत भी वैश्वीकरण के दौर में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को नैतिकता और जिम्मेदारी के माध्यम से पाटने का प्रस्ताव रखा। ट्रस्टीशिप का अर्थ है कि धन और संसाधन किसी व्यक्ति के पास समाज के विश्वास के रूप में हों और वह उसका उपयोग केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं बल्कि सार्वजनिक भलाई के लिए करे (Fischer, 1950, p. 342)। आज के CSR (कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व) की अवधारणा इसी विचार से प्रेरणा लेती है।

गांधी के जीवन में 'सादगी' एक मूलमंत्र था। उन्होंने कहा था, "पृथ्वी सबकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी के लालच को नहीं"

(Fischer, 1950, p. 342)। आज जब जलवायु परिवर्तन और संसाधनों के संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है, गांधी का यह कथन एक चेतावनी की तरह सामने आता है। उपभोग की अंधी दौड़, प्रदूषण, और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता के परिणामस्वरूप हमारी पृथ्वी थकने लगी है। ऐसे में सादा जीवन, सीमित उपभोग और पारंपरिक ज्ञान की पुनः खोज न केवल संभव, बल्कि आवश्यक प्रतीत होती है।

गांधी का यह भी मानना था कि विकास केवल आर्थिक नहीं, नैतिक और आत्मिक भी होना चाहिए। आधुनिक वैश्विक व्यवस्था में जहाँ मूल्य–शून्यता, प्रतिस्पर्धा और भोगवाद हावी हैं, गांधी का सत्य और अहिंसा पर आधारित नैतिक दृ ष्टिकोण हमें मानवीय गरिमा की याद दिलाता है (Nanda, 2002, p. 117)। उन्होंने शिक्षा, श्रम, और सेवा को जीवन के केंद्र में रखाकृजो आज भी वैकल्पिक विकास मॉडल की नींव हो सकते हैं।

गांधी के विचारों पर आधारित कई आधुनिक प्रयास हो रहे हैंकृजैसे वंदना शिवा का 'नवदान्य' आंदोलन जो जैव विविधता और परंपरागत खेती को बढ़ावा देता है, खादी ग्रामोद्योग आयोग जो स्थानीय रोजगार और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहित करता है, या स्वराज्य यूनिवर्सिटी जैसी संस्थाएं जो वैकल्पिक शिक्षा के जरिए युवा नेतृत्व को तैयार कर रही हैं। ये सभी गांधीवादी दर्शन के आधुनिक रूप हैं जो हमें यह बताते हैं कि गांधी के विचार केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि आज भी जीवंत हैं।

हालाँकि कुछ आलोचक गांधी के विचारों को आदर्शवादी और आधुनिक तकनीक के प्रतिकूल मानते हैं (Sen, 1999, p. 262) परंतु यह दृष्टिकोण अधूरा है। गांधी तकनीक के विरोधी नहीं थे, वे केवल उस तकनीक के विरोधी थे जो मनुष्य को विस्थापित करे, बेरोजगार बनाए और प्रकृति से काट दे।

इस प्रकार, वैश्वीकरण के इस जटिल और बहुआयामी युग में गांधीवादी दर्शन एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। उनका मॉडल हमें एक ऐसा विकास दृ ष्टिकोण प्रदान करता है जो न्याय, समानता, पारिस्थितिक संतुलन और नैतिक मूल्यों पर आधारित है। यदि हम गांधी के ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, सादगी और सत्य के विचारों को आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित कर सकें, तो हम एक ऐसे वैश्विक समाज की ओर बढ़ सकते हैं जो न केवल समृद्ध हो, बल्कि न्यायपूर्ण और संतुलित भी हो।

संदर्भ सूची **(References)**

Fischer, L (1950), *The Life of Mahatma Gandhi*, New York: Harper & Brothers, p. 342-

Gandhi, M. K. (1909), *Hind Swaraj*, Ahmedabad: Navajivan Publishing House, p. 35

Gandhi, M. K. (1937), *Constructive Programme, Its Meaning and Place*, Ahmedabad: Navajivan Trust, p. 44

Gandhi, M. K. (1946), *India of My Dreams*, Ahmedabad: Navajivan Publishing House, p. 72

Nanda, M. (2002), *Gandhi and the Idea of Global Justice*, Delhi: Three Essays Collective, p. 117

Sen. A (1999), *Development as Freedom*, New York: Alfred A. Knopf, p. 262

Stiglitz, J. E. (2002), *Globalization and Its Discontents*, New York: W.W. Norton & Company, p. 28